स्थापित जुलाई 1988

ISSN No. 0971-796X

F/15

प्राकृतविद्या

वर्ष 31, अंक 2

अप्रैल-जून 2019 ई.

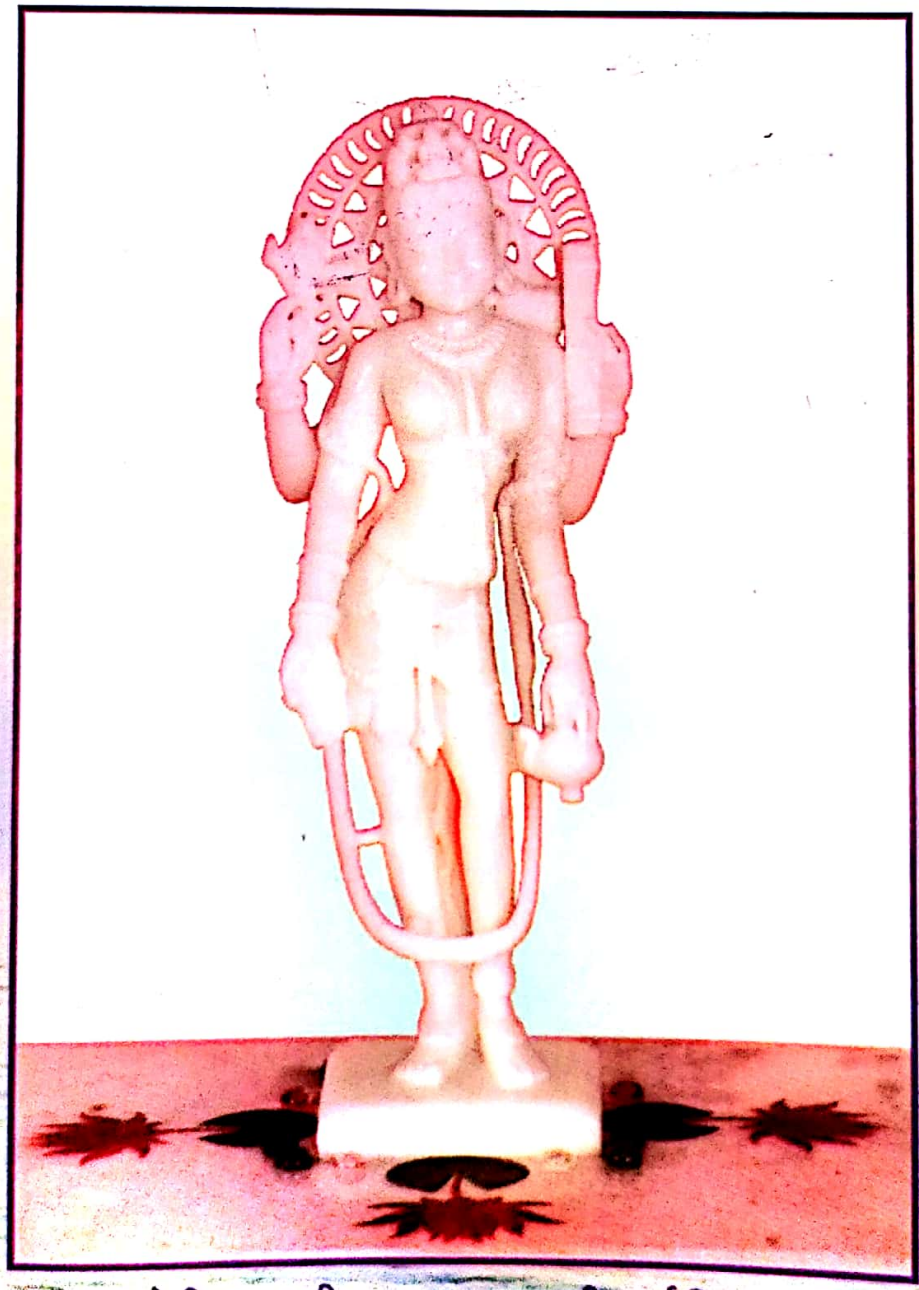

श्रुतदेवी सरस्वती, कुन्दकुन्द भारती, नई दिल्ली

Scanned by CamScanner

JAIN VISHVA BHARATI UNIVERSITY
LADNUN-341306 (RAJASTHAN)
31 JUL 2019
CENTRAL LIBRARY
Received as on .....
Signature .....

ISSN No. 0971-796 ×

प्राकृत-विद्या
पागद-विज्जा

PRAKRIT-VIDYA
Pāgada-Vijjā

प्राकृत, अपभ्रंश आदि प्राच्य भारतीय भाषाओं की हिन्दी तक की विकास-यात्रा दर्शानेवाली समर्पित त्रैमासिकी शोध-पत्रिका

A quarterly journal devoted to researches on the development of Prakrit, Apabhramsha and Ancient Indian Languages upto Hindi Language

वीर निर्वाण संवत् 2545 अप्रैल-जून 2019 वर्ष 31 अंक 2
Veer Nirvan Samvat 2545 April-June 2019 Year 31 Issue 2

आचार्य कुन्दकुन्द समाधि-संवत् 2025

सम्पादक-मण्डल

श्री पुनीत जैन
(नवभारत टाइम्स)

डॉ. रमेश कुमार पाण्डेय
(श्री ला.ब.शा.रा. संस्कृत विद्यापीठ)

मानद सम्पादक
प्रो. (डॉ.) वीरसागर जैन
(श्री ला.ब.शा.रा. संस्कृत विद्यापीठ, नई दिल्ली)

प्रबन्ध सम्पादक
श्री कमलकान्त जैन

प्रकाशक
श्री अनिल कुमार जैन
महामन्त्री
श्री कुन्दकुन्द भारती ट्रस्ट
18-बी, स्पेशल इन्स्टीट्यूशनल एरिया,
नई दिल्ली-110067
फोन : (011) 26564510, 46062192
ई-मेल: kundkundbharti@gmail.com

Publisher
ANIL KUMAR JAIN
Secretary
Shri Kundkund Bharti Trust
18-B, Special Institutional Area
New Delhi-110067
Phone: (011) 26564510, 46062192
E-mail: kundkundbharti@gmail.com

इस प्रति का मूल्य—बीस रुपया

Scanned by CamScanner

अनुक्रम

क्र.सं.	शीर्षक	लेखक	पृष्ठ सं.
1.	मंगलाचरणः जयमाला		3
2.	सम्पादकीय : दिल्ली के जैन विद्वान्	प्रो. वीरसागर जैन	5
3.	श्रावकों व विद्वानों को त्यागियों/श्रमणों की समीक्षा का पूर्ण अधिकार है	आचार्य विद्यानन्द मुनिराज	10
4.	प्राण और प्राणायाम	आचार्य श्रुतसागर मुनिराज	15
5.	समयसार और गीता	डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल	20
6.	प्राकृत के दो महासूर्य	डॉ. समणी संगीत प्रज्ञा	27
7.	जैन संस्कृति के विस्मृत केंद्र : अंडमान निकोबार द्वीप	प्रो. (डॉ.) राजाराम जैन	36
8.	जैन दृष्टि में वर्ण एवं जाति	डॉ. शुद्धात्मप्रकाश जैन	39
9.	दर्शनाचार के आठ अंग और सप्तभय-मुक्ति	डॉ. दिलीप धींग	44
10.	सल्लेखना एक महान् उत्सव	अल्पना मारौरा 'शुभि'	53
11.	जैन महापुराण में संस्कार	मीनाक्षी मारू	58
12.	जैन पर्व : एक विश्लेषण	डॉ. आशु जैन	70
13.	महाकवि पुष्पदंत और उनका अपभ्रंश को अवदान	सोनू जैन	76
14.	वर्द्धमान और वैशाली : संस्कृत-साहित्य के संदर्भ में	डॉ. जयदेव मिश्र	84
15.	समाचार-दर्शन		88

वैशाली की यात्रा अवश्य करें

यदि आपने अभी तक एक बार भी शासननायक अंतिम तीर्थंकर भगवान महावीर की जन्मभूमि, विदेह कुण्डपुर, वैशाली (बिहार) की यात्रा न की हो तो अब शीघ्र ही अवश्य करें। वहाँ आवास, भोजन की सर्व व्यवस्थाएँ भी हो गई हैं।

सम्पर्क सूत्र– श्री कमलकान्त जैन, मोबाईल : 09871138842

आगामी अंक हेतु रचनाएँ आमंत्रित हैं

'प्राकृतविद्या' के आगामी अंक हेतु आप भी अपनी ऐसी मौलिक एवं अप्रकाशित रचना हमें प्रेषित कर सकते हैं, जो प्राकृत एवं जैन विद्या से संबंधित हों। आपके अभिमत एवं सुझाव भी सादर आमंत्रित हैं। –सम्पादक

Scanned by CamScanner

प्राकृत के दो महासूर्य

—डॉ. समणी संगीत प्रज्ञा*

प्राचीन भारतीय सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक विरासत के विषय में जानकारी प्राप्त करने के लिए प्राकृत भाषा का अध्ययन अत्यन्त आवश्यक है। प्राकृतभाषा लोकभाषा के नाम से सर्वत्र ख्याति प्राप्त है। प्राकृतभाषा देश की एक प्रमुख धरोहर है, जिसका संरक्षण एवं संवर्धन भारतीयता की समग्रता के अभिज्ञान के लिए अनिवार्य है। प्राकृत एक भाषा न होकर एक भाषिक समुदाय है। इस भाषा में दार्शनिक-साहित्य, काव्य-साहित्य चरित-साहित्य के साथ-साथ वैज्ञानिक विषयों पर भी पर्याप्त सामग्री उपलब्ध है।

प्राकृत भाषा में ग्रन्थ-रचना ईसवी पूर्व छठी शताब्दी से प्रायः वर्तमान काल तक न्यूनाधिक रूप से निरन्तर होती चली आ रही है। यद्यपि हम देखते हैं कि शनैः-शनैः हिन्दी आदि विभिन्न आधुनिक भाषाओं के प्रारम्भ होने से प्राकृत भाषा में ग्रंथ-रचना मन्द होती जा रही है, किंतु यह भी नहीं कहा जा सकता कि सर्वथा समाप्त हो गई है, क्योंकि यह परम्परा आज भी सुरक्षित है। इस भाषा को सवंर्धित करने का विशेष श्रेय जैनाचार्यों एवं जैन मुनियों पर जाता है। जैन शासन में अनेक आचार्य, मुनियों ने वर्तमान में भी अपनी प्रतिभा से अनेक ग्रंथों की रचना कर जैन शासन की परम्परा को शाश्वत बनाए रखा है। जैन धर्म के तेरापंथ धर्मसंघ के दशम अधिशास्ता आचार्य महाप्रज्ञ जी ने प्राकृत भाषा को अत्यधिक महत्त्व दिया। उन्होंने ग्रंथों की रचना तो की ही, इसके अतिरिक्त अपने वक्तव्य में भी वहुधा प्राकृत भाषा का उपयोग किया।

आचार्य तुलसी का वि.सं. 2011 का चातुर्मास मुंबई में था। पेन्स्विेलिया (अमेरिका) यूनिवर्सिटी के संस्कृत विभागाध्यक्ष डॉ. नॉरमन ब्राउन आचार्यश्री के पास आए। वे संस्कृत और प्राकृत भाषा के प्रकांड पंडित थे। वे साधु-साध्वियों के संस्कृत अध्ययन से बहुत प्रभावित हुए। उन्होंने आचार्यश्री से प्रार्थना के स्वर

*विभागाध्यक्ष एवं सह-आचार्य, प्राकृत एवं संस्कृत विभाग, जैन विश्वभारती, लाड़नूं (राज.)

Scanned by CamScanner